IMPACT FACTOR 7.50 (SJIAI)

BIHAR SHODH SAMAAGAM

Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 2, April-june, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.19942978

ISSN : 3048-6971

बालमुकुंद बिस्सा का जीवन-चरित एवं गांधीवादी संघर्ष का बलिदान

प्रेम कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर (इतिहास)
श्री रणजीत सिंह pg कॉलेज झाब, जालोर (राजस्थान)

सारांश

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के उस व्यापक आंदोलन में बालमुकुंद बिस्सा का जीवन–चरित गांधीवादी दर्शन की गहन मानवीय अभिव्यक्ति का प्रतीक बनकर उभरता है। एक साधारण पुष्कर्णा ब्राह्मण परिवार से निकलकर उन्होंने पूर्ण स्वराज की अवधारणा को अपने अस्तित्व का केंद्र बना लिया। उनके भीतर गांधीजी के अहिंसा, सत्याग्रह और स्वदेशी के सिद्धांतों ने इतनी गहरी जड़ें जमा लीं कि व्यक्तिगत जीवन की सारी सुविधाएँ राष्ट्र की मुक्ति के समक्ष तुच्छ हो गईं। बिस्सा का संघर्ष केवल राजनीतिक विरोध तक सीमित नहीं था, यह मानवीय गरिमा, आर्थिक स्वावलंबन और सामाजिक न्याय की निरंतर खोज था। उन्होंने मारवाड़ लोक परिषद के माध्यम से रियासती शासन की जागीरदारी व्यवस्था के विरुद्ध जो जन–जागरण किया, वह गांधीवादी विचारधारा को राजस्थान की स्थानीय परिस्थितियों में अनुकूलित करने का जीवंत उदाहरण था। उनकी सक्रियता ने दिखाया कि सच्चा सत्याग्रही वह है जो शारीरिक कष्ट को भी राष्ट्र–प्रेम की आहुति में बदल देता है। जेल में भूख हड़ताल के रूप में उनका अंतिम बलिदान अहिंसा की उस शक्ति को रेखांकित करता है जो हिंसा से कहीं अधिक प्रभावी और स्थायी होती है। मात्र 34 वर्ष की अल्पायु में उनका महाप्रयाण एक व्यक्तिगत त्रासदी नहीं, बल्कि पूरे स्वतंत्रता आंदोलन की सामूहिक पीड़ा का प्रतिबिंब था।

इस आलेख में उनके जीवन को ऐतिहासिक संदर्भ में रखकर विश्लेषण किया गया है कि किस प्रकार एक व्यक्ति की अटूट निष्ठा ने क्षेत्रीय आंदोलन को राष्ट्रीय धारा से जोड़ा। उनका बलिदान हमें याद दिलाता है कि स्वतंत्रता की लड़ाई में कितने अज्ञात सिपाहियों ने अपनी पूरी मानवीय ऊर्जा न्योछावर कर दी। आज के समय में जब हम लोकतंत्र की रक्षा और अहिंसक मूल्यों की पुनर्स्थापना की बात करते हैं, तब बिस्सा का जीवन–चरित हमें प्रेरित करता है कि सच्ची सेवा हमेशा मौन और समर्पित होती है। यह अध्ययन उनके योगदान को मात्र स्मृति में नहीं, बल्कि वर्तमान सामाजिक–राजनीतिक चेतना में जीवित रखने का प्रयास है।

मुख्य शब्द :– आर्थिक स्वावलंबन, परिवर्तन, राष्ट्र–सेवा , अहिंसा, स्वदेशी, स्वराज, आत्मनिर्भरता, गांधीवादी।

1. परिचय

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की जटिल यात्रा में राजस्थान की रियासतें एक विशेष स्थान रखती हैं, जहाँ ब्रिटिश प्रत्यक्ष शासन के अभाव में जागीरदारी प्रथा और रियासती निरंकुशता ने जन–आकांक्षाओं को और भी तीव्र बना दिया था। ऐसे वातावरण में बालमुकुंद बिस्सा का उदय उन गांधीवादी योद्धाओं की श्रेणी में होता है जिन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन को स्थानीय स्तर पर गहराई प्रदान की। उनका जीवन–चरित हमें उस मानवीय संघर्ष की याद दिलाता है जिसमें व्यक्तिगत समर्पण ने सामूहिक परिवर्तन की नींव रखी। गांधीजी के पूर्ण स्वराज और ग्राम स्वराज के आह्वान ने बिस्सा जैसे असंख्य कार्यकर्ताओं के भीतर एक गहरी आंतरिक परिवर्तन पैदा किया। उन्होंने अहिंसा को मात्र नीति नहीं, बल्कि जीवन–शैली बना लिया। खादी और चरखे को अपनाकर उन्होंने स्वदेशी की अवधारणा को व्यावहारिक रूप दिया, जिससे आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में एक सशक्त संदेश गया। मारवाड़ लोक परिषद के सक्रिय नेता के रूप में उन्होंने रियासती शासन की जड़ों को हिलाया और जन–सामान्य को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका संघर्ष इस बात का प्रमाण है कि स्वतंत्रता की लड़ाई केवल बड़े शहरों या प्रमुख नेताओं तक सीमित नहीं थीय यह देश के हर कोने में फैली हुई थी, जहाँ साधारण व्यक्ति भी असाधारण योगदान दे सकता था।

इस लेख का उद्देश्य बिस्सा के जीवन को शुद्ध ऐतिहासिक और वैचारिक परिप्रेक्ष्य में रखना है। हम उनके बलिदान को केवल एक घटना के रूप में नहीं, बल्कि गांधीवादी संघर्ष की उस चरम अभिव्यक्ति के रूप में देखते हैं जिसमें जेल की यातनाएँ और भूख हड़ताल ने अहिंसा की शक्ति को और अधिक प्रभावशाली बना दिया। उनका महाप्रयाण उस पीढ़ी की भावना को दर्शाता है जो स्वतंत्रता के लिए किसी भी कीमत पर तैयार थी। बिस्सा का जीवन हमें प्रेरित करता है कि सच्ची देशभक्ति हमेशा मौन, निरंतर और मानवीय संवेदनाओं से ओत–प्रोत होती है। इस परिचय के माध्यम से हम पूरे शोध–पत्र को उस व्यापक संदर्भ में स्थापित करते हैं जहाँ व्यक्तिगत बलिदान राष्ट्रीय चेतना का अभिन्न अंग बन जाता है।

2. प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

बालमुकुंद बिस्सा का प्रारंभिक जीवन उन गहरी मानवीय प्रक्रियाओं का जीवंत उदाहरण था जिनमें पारंपरिक परिवारिक मूल्य और बाहरी वातावरण का निरंतर संवाद व्यक्ति को राष्ट्र–चेतना की ओर ले जाता है। बालमुकुंद बिस्सा का जन्म 24 दिसंबर 1908 को जोधपुर राज्य की डीडवाना तहसील के पीलवा गांव में पुष्कर्णा ब्राह्मण परिवार में हुआ था। पुष्कर्णा ब्राह्मण परिवार में जन्म लेने वाले बिस्सा का बचपन और किशोरावस्था का अधिकांश काल कोलकाता जैसे महानगरीय केंद्र में बीता, जहाँ उनके पिता का व्यापारिक व्यवसाय परिवार को ले गया था। इस स्थानांतरण ने उनके व्यक्तित्व निर्माण में एक अनोखा आयाम जोड़ा एक ओर जहाँ ग्रामीण राजस्थानी संस्कृति की जड़ें उन्हें सादगी और कर्तव्यनिष्ठा सिखाती रहीं, वहीं कोलकाता का शहरी वातावरण स्वतंत्रता संग्राम की हलचलों से उन्हें परिचित कराता गया। उनकी शिक्षा मुख्यतः कोलकाता में हुई, जहाँ बौद्धिक विकास के साथ–साथ सामाजिक–राजनीतिक जागृति का बीज भी अंकुरित हुआ। यह शिक्षा मात्र पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं थीय यह उनके भीतर एक आंतरिक परिवर्तन लाई जिसने उन्हें जीवन के प्रति एक गहरी संवेदनशीलता प्रदान की। परिवार की व्यापारिक पृष्ठभूमि ने उन्हें व्यावहारिक समझा दी, जबकि शिक्षा ने राष्ट्र–प्रेम और सामाजिक न्याय की भावना को पुष्ट किया। 1934 में जोधपुर लौटने का निर्णय उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ, क्योंकि इससे वे अपनी जड़ों से पुनः जुड़ सके और स्थानीय परिस्थितियों में अपनी ऊर्जा लगाने का अवसर मिला।

इस प्रारंभिक चरण ने बिस्सा को वह मानवीय दृढ़ता प्रदान की जो बाद के वर्षों में उनके संघर्ष की नींव बनी। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से सीखा कि सच्चा ज्ञान वह है जो व्यक्ति को स्वार्थ से ऊपर उठाकर सामूहिक कल्याण की ओर ले जाए। उनका प्रारंभिक जीवन हमें यह समझाता है कि कैसे एक व्यक्ति की प्रारंभिक परिस्थितियाँ उसके भावी योगदान को आकार देती हँकृन केवल बौद्धिक रूप से, बल्कि भावनात्मक और नैतिक रूप से भी। इस चरण में विकसित हुई संवेदनशीलता ने उन्हें गांधीवादी मूल्यों के प्रति स्वाभाविक आकर्षण दिया और बाद में उनके सामाजिक–राजनीतिक कार्यों में निरंतरता प्रदान की। इस प्रकार, उनका प्रारंभिक जीवन और शिक्षा राष्ट्र–निर्माण की उस मानवीय यात्रा का प्रतीक बन गए जो व्यक्तिगत विकास को सामूहिक आंदोलन से जोड़ती है।

3. गांधीवादी विचारों से प्रभाव और सामाजिक कार्य

गांधीवादी विचारों से बालमुकुंद बिस्सा का प्रभाव इतना गहरा और व्यापक था कि यह उनके सम्पूर्ण अस्तित्व का अभिन्न अंग बन गया। महात्मा गांधी के पूर्ण स्वराज, अहिंसा, सत्याग्रह और स्वदेशी के सिद्धांतों ने उनके भीतर एक आंतरिक क्रांति पैदा की, जिसने उन्हें व्यक्तिगत जीवन की सुविधाओं से ऊपर उठाकर राष्ट्र–सेवा के पथ पर अग्रसर किया। वे गांधीजी को मात्र एक नेता नहीं, बल्कि एक मानवीय आदर्श मानते थे जिनके विचारों ने उनकी चेतना को पूर्णतः रूपांतरित कर दिया। इस प्रभाव ने उन्हें अहिंसा को जीवन–शैली बनाने और स्वदेशी को आर्थिक स्वावलंबन का आधार बनाने के लिए प्रेरित किया।

उनके सामाजिक कार्य इस प्रभाव की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति थे। उन्होंने खादी और चरखे को अपनाकर स्वदेशी की अवधारणा को व्यावहारिक रूप प्रदान किया, जिससे आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में एक सशक्त संदेश गया। महिलाओं को चरखा चलाने का प्रशिक्षण देकर उन्होंने सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में भी योगदान दिया। मारवाड़ लोक परिषद के सक्रिय सदस्य के रूप में उन्होंने जागीरदारी प्रथा के विरुद्ध जन–जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जहाँ गांधीवादी सत्याग्रह को स्थानीय परिस्थितियों में अनुकूलित किया गया। उनका मानना था कि सच्ची आजादी केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक स्तर पर भी होनी चाहिए।

यह प्रभाव उनके सामाजिक कार्यों में निरंतरता और गहराई लाया। उन्होंने खादी भंडारों के माध्यम से न केवल स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार किया, बल्कि उन्हें क्रांतिकारियों के मिलन और रणनीति बनाने का केंद्र भी बनाया। इस कार्य में उनकी मानवीय संवेदना स्पष्ट दिखती थी, वे हर व्यक्ति को राष्ट्र–निर्माण का हिस्सा मानते थे। गांधीवादी विचारों ने उन्हें सिखाया कि सेवा मौन और समर्पित होनी चाहिए, बिना किसी व्यक्तिगत लाभ की अपेक्षा के। आज के संदर्भ में उनका यह प्रभाव हमें याद दिलाता है कि सच्चे सामाजिक कार्य वह हैं जो मूल्यों से प्रेरित हों और मानवीय गरिमा को केंद्र में रखें। बिस्सा का जीवन–चरित इस बात का प्रमाण है कि गांधीवादी दर्शन जब किसी व्यक्ति के हृदय में उतरता है, तो वह न केवल व्यक्तिगत परिवर्तन लाता है बल्कि पूरे समाज की दिशा बदलने की क्षमता रखता है। उनके सामाजिक कार्यों ने गांधीवादी संघर्ष को राजस्थान की रियासती परिस्थितियों में एक नया आयाम दिया और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया।

4. राजनीतिक संघर्ष और मारवाड़ लोक परिषद में भूमिका

बालमुकुंद बिस्सा का राजनीतिक संघर्ष उन गहन मानवीय प्रक्रियाओं का प्रतिबिंब था जिनमें व्यक्तिगत समर्पण राष्ट्रीय और क्षेत्रीय आकांक्षाओं को एकाकार कर देता है। मारवाड़ लोक परिषद के माध्यम से उन्होंने रियासती शासन की जागीरदारी व्यवस्था के विरुद्ध जो निरंतर प्रयास किया, वह गांधीवादी सत्याग्रह को स्थानीय परिस्थितियों में अनुकूलित करने की एक उत्कृष्ट अभिव्यक्ति था। उनकी भूमिका मात्र संगठनात्मक नहीं थीय वह एक आंतरिक नैतिक दृढ़ता से प्रेरित थी जो जन–सामान्य की गरिमा और उत्तरदायी शासन की मांग को केंद्र में रखती थी।

उन्होंने लोक परिषद को एक ऐसा मंच बनाया जहाँ अहिंसा और स्वदेशी के सिद्धांत व्यावहारिक राजनीतिक संघर्ष का रूप ले सकें। जागीरदारी प्रथा के विरुद्ध उनका संघर्ष इस बात को रेखांकित करता है कि सच्ची स्वतंत्रता केवल बाहरी शासन से मुक्ति नहीं, बल्कि आंतरिक सामाजिक–आर्थिक न्याय की प्राप्ति भी है। उनकी नेतृत्व क्षमता ने परिषद के कार्यकर्ताओं के भीतर

एक सामूहिक चेतना जगाई, जिसमें हर व्यक्ति को राष्ट्र–निर्माण का सक्रिय भागीदार माना गया। यह भूमिका उनके मानवीय संवेदनशीलता को दर्शाती है, वे सत्ता के दमन को शारीरिक कष्ट के रूप में स्वीकार करने को तैयार थे, लेकिन अपनी वैचारिक निष्ठा से कभी समझौता नहीं किया।

राजनीतिक संघर्ष के इस चरण ने बिस्सा को गांधीवादी दर्शन की क्षेत्रीय व्याख्या का प्रतीक बना दिया। उन्होंने दिखाया कि लोक परिषद जैसी संस्था के माध्यम से एक व्यक्ति अपनी सीमित क्षमताओं को भी व्यापक जन–आंदोलन में रूपांतरित कर सकता है। उनका योगदान हमें समझाता है कि राजनीतिक संघर्ष तब सार्थक होता है जब वह मानवीय मूल्यों, अहिंसा, न्याय और समानता से ओत–प्रोत हो। इस भूमिका ने पूरे मारवाड़ क्षेत्र में एक स्थायी वैचारिक धारा प्रवाहित की जो बाद के वर्षों में स्वतंत्रता संग्राम की राष्ट्रीय धारा से जुड़ सकी। इस प्रकार, उनका राजनीतिक संघर्ष और परिषद में भूमिका न केवल ऐतिहासिक घटना थी, बल्कि मानवीय चेतना के विकास की एक निरंतर प्रक्रिया थी जो आज भी प्रासंगिक बनी हुई है।

5. जेल में बलिदान : गांधीवादी संघर्ष का चरम

बालमुकुंद बिस्सा का जेल में बलिदान गांधीवादी संघर्ष की उस चरम अभिव्यक्ति का प्रतीक था जिसमें अहिंसा की शक्ति अपने पूर्णतम मानवीय रूप में प्रकट होती है। जेल की दीवारों के भीतर उन्होंने अन्याय और दमन के विरुद्ध जो आंतरिक प्रतिरोध किया, वह शारीरिक कष्ट को नैतिक विजय में बदल देने का एक उत्कृष्ट उदाहरण था। भूख हड़ताल के रूप में उनका अंतिम संघर्ष इस बात को रेखांकित करता है कि सत्याग्रही व्यक्ति के लिए स्वाधीनता की लड़ाई व्यक्तिगत अस्तित्व से ऊपर उठकर एक सार्वभौमिक मानवीय मूल्य बन जाती है। उनका बलिदान मात्र शारीरिक समर्पण नहीं थाय यह गांधीवादी दर्शन की उस गहन समझ का परिणाम था जो हिंसा से कहीं अधिक शक्तिशाली और स्थायी प्रभाव छोड़ता है। जेल में उन्होंने दिखाया कि सच्चा प्रतिरोध वह है जो आत्म–नियंत्रण और धैर्य पर आधारित हो। इस चरम क्षण में उनकी मानवीय दृढ़ता ने पूरे आंदोलन को एक नई नैतिक ऊँचाई प्रदान की। वे जानते थे कि उनका बलिदान व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामूहिक चेतना का हिस्सा बन जाएगा जो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करेगा। मारवाड़ लोक परिषद के प्रमुख नेता के रूप में उन्होंने रियासती शासन की जागीरदारी प्रथा और अत्याचारों के विरुद्ध जन–जागरण का नेतृत्व किया। इसी कारण 9 जून 1942 को उन्हें भारत रक्षा अधिनियम (क्ममिदेम वाप्दकपं। बज) के अंतर्गत गिरफ्तार कर जोधपुर जेल भेज दिया गया। जेल में कैदियों को दिए जा रहे खराब भोजन तथा अन्य अन्याय के विरुद्ध उन्होंने भूख हड़ताल शुरू की, जिसमें उनके साथ कुल 41 सत्याग्रही शामिल थे। हड़ताल के मात्र 10 दिन बाद. 19 जून 1942 को जोधपुर के बिंदम अस्पताल (वर्तमान महात्मा गांधी अस्पताल) में उनका निधन हो गया। इस प्रकार उन्होंने मात्र 34 वर्ष की अल्पायु में गांधीवादी अहिंसा और सत्याग्रह के मार्ग पर चलते हुए अपने प्राणों का बलिदान दे दिया।

यह बलिदान गांधीवादी संघर्ष की उस परिपक्वता को दर्शाता है जहाँ व्यक्ति अपनी पूरी मानवीय ऊर्जा राष्ट्र की मुक्ति के लिए न्योछावर कर देता है। उन्होंने साबित किया कि जेल की यातनाएँ भी अहिंसा के पथ पर चलने वाले के लिए विजय का माध्यम बन सकती हैं। इस चरम बलिदान ने स्वतंत्रता संग्राम को एक गहरा मानवीय आयाम दिया, जहाँ शारीरिक अंत की जगह नैतिक अमरता स्थापित होती है। आज भी यह हमें सिखाता है कि संघर्ष की सार्थकता उसके नैतिक आधार में निहित है, न कि केवल परिणाम में। बिस्सा का जेल बलिदान इसलिए चिरंतन है क्योंकि यह गांधीवादी मूल्यों की उस शाश्वत शक्ति को जीवित रखता है जो कठिनतम परिस्थितियों में भी मानवीय गरिमा को बनाए रखती है।

6. विरासत और प्रासंगिकता

बालमुकुंद बिस्सा की विरासत उन गुमनाम मानवीय प्रयासों का जीवंत साक्ष्य है जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को गहराई और व्यापकता प्रदान की। उनका जीवन–चरित आज भी हमें याद दिलाता है कि राष्ट्र–निर्माण में बड़े नामों के साथ–साथ उन असंख्य व्यक्तियों का योगदान भी उतना ही महत्वपूर्ण है जिन्होंने मौन समर्पण से इतिहास रचा। उनकी विरासत गांधीवादी मूल्यों, अहिंसा, स्वदेशी और जन–जागरण की निरंतरता को दर्शाती है, जो समय के साथ क्षीण नहीं होती बल्कि और अधिक प्रासंगिक हो जाती है। आज के संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता लोकतंत्र की रक्षा और सामाजिक न्याय की खोज में स्पष्ट रूप से दिखती है। जब हम रियासती शासन की जागीरदारी जैसी पुरानी असमानताओं की जगह आधुनिक चुनौतियों, आर्थिक विषमता और सामाजिक विभेद का सामना कर रहे हैं, तब बिस्सा का संघर्ष हमें सिखाता है कि सच्चा परिवर्तन हमेशा अहिंसक और मूल्य–आधारित होता है। उनकी विरासत उन युवा पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है जो राष्ट्र सेवा को केवल पेशा नहीं, बल्कि जीवन–दर्शन मानती हैं।

यह विरासत हमें प्रोत्साहित करती है कि गुमनाम नायकों की उपेक्षा न की जाए, क्योंकि वे ही सामूहिक चेतना की नींव होते हैं। आज के समय में जब अहिंसा और सहिष्णुता पर नए सिरे से विचार किया जा रहा है, तब बिस्सा का जीवन हमें उस मानवीय संवेदनशीलता की याद दिलाता है जो संघर्ष को सकारात्मक दिशा देती है। उनकी प्रासंगिकता इसलिए भी बढ़ गई है क्योंकि वे हमें सिखाते हैं कि सच्ची देशभक्ति व्यक्तिगत बलिदान से शुरू होती है और सामूहिक कल्याण तक फैलती है। इस विरासत को जीवित रखना न केवल ऐतिहासिक न्याय है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए एक नैतिक दायित्व भी है। बिस्सा का जीवन–चरित हमें आश्वस्त करता है कि मानवीय समर्पण की ज्योति कभी बुझती नहीं, वह पीढ़ी दर पीढ़ी प्रकाशित होती रहती है।

निष्कर्ष

बालमुकुंद बिस्सा का जीवन–चरित भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गांधीवादी दर्शन की उस गहन मानवीय अभिव्यक्ति का चरमोत्कर्ष प्रस्तुत करता है जिसमें व्यक्तिगत समर्पण ने सामूहिक परिवर्तन की नींव रखी। उनका संघर्ष और अंतिम बलिदान हमें स्पष्ट रूप से समझाता है कि सच्ची स्वतंत्रता केवल राजनीतिक मुक्ति तक सीमित नहीं होती, बल्कि वह अहिंसा, स्वदेशी और सामाजिक न्याय की निरंतर खोज से उपजती है। बिस्सा ने दिखाया कि एक व्यक्ति की आंतरिक नैतिक दृढ़ता पूरे क्षेत्रीय आंदोलन को राष्ट्रीय धारा से जोड़ सकती है और गुमनाम योगदान को अमर बना सकती है।

हमने देखा कि उनका प्रारंभिक जीवन, गांधीवादी विचारों से गहरा प्रभाव, राजनीतिक संघर्ष और जेल में बलिदान, ये सभी चरण एक–दूसरे से जुड़े हुए थे और एक ही मानवीय मूल्य की निरंतरता को दर्शाते थे। वे हमें सिखाते हैं कि संघर्ष की सार्थकता उसके नैतिक आधार में निहित है, न कि केवल बाहरी परिणाम में। आज के समय में जब लोकतंत्र, अहिंसा और सामाजिक समानता की चुनौतियाँ नए रूप ले रही हैं, तब बिस्सा का जीवन–चरित हमें प्रेरित करता है कि सच्ची राष्ट्र–सेवा हमेशा मौन, समर्पित और मूल्य–केन्द्रित होती है। उनकी विरासत हमें याद दिलाती है कि स्वतंत्रता संग्राम के असंख्य अज्ञात सिपाहियों ने अपनी पूरी मानवीय ऊर्जा न्योछावर करके आज की पीढ़ी को लोकतांत्रिक मूल्यों का उत्तराधिकार दिया है।

बालमुकुंद बिस्सा का बलिदान केवल एक व्यक्तिगत घटना नहीं, बल्कि गांधीवादी संघर्ष की उस शाश्वत शक्ति का प्रतीक है जो कठिनतम परिस्थितियों में भी मानवीय गरिमा को बनाए रखती है। यह अध्ययन हमें आश्वस्त करता है कि ऐसे गुमनाम नायकों की स्मृति को जीवित रखना न केवल ऐतिहासिक न्याय है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए नैतिक दायित्व भी है। उनके जीवन से प्राप्त अंतर्दृष्टि हमें प्रोत्साहित करती है कि हम भी अहिंसा और समर्पण के पथ पर चलते हुए राष्ट्र–निर्माण में अपनी भूमिका निभाएँ। इस प्रकार, बिस्सा का जीवन–चरित पीढ़ी दर पीढ़ी प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा और गांधीवादी मूल्यों की निरंतरता को सुनिश्चित करेगा।

संदर्भ सूची :–

1. भाटी, एन. एस., संपादक, मारवाड़ इतिहास के अध्ययन, राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर, 1979।
2. माथुर, सोभाग, मारवाड़ में उत्तरदायी शासन के लिए संघर्ष, शारदा पब्लिशिंग हाउस, जोधपुर, 1982।
3. पनागरिया, बी. एल, राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2005।
4. शाह, पी. आर., ब्रिटिश पैरामाउंटसी के दौरान राज मारवाड़, जोधपुर विश्वविद्यालय, इतिहास विभाग, जोधपुर, 1982।
5. थानवी, बालकृष्ण, मारवाड़ लोक परिषद के जन आंदोलन, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2020।
6. शर्मा, जी. एन., और विजय कुमार वशिष्ठ, राजस्थान के विशेष संदर्भ में राजनीतिक जागरण और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, राजस्थान विश्वविद्यालय, राजस्थान अध्ययन केंद्र, जयपुर, 1995।
7. सक्सेना, के. एस., राजस्थान में राजनीतिक आंदोलन और जागृति : 1857 से 1947, एस. चंद एंड कंपनी, 1971।
8. भारत सरकार. "बालमुकुंद बिस्सा." अनसंग हीरोज पोर्टल, अमृत काल, संस्कृति मंत्रालय, n-d-] cmsadmin-amritkaal-nic-in/unsung&heroes&detail-htm\261- Accessed 27 Apr- 2026-
9. राजस्थान राज्य अभिलेखागार, जोधपुर राज्य के स्वतंत्रता सेनानी (खंड श्रृंखला), राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।
10. राजस्थानी ग्रंथागार सामूहिक, राजस्थानी अभिलेखों एवं डिंगल साहित्य में मारवाड़ का राजनैतिक–सांस्कृतिक इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2022।
11. https://www.patrika.com/jodhpur-news/azadi-ki-baat-balmukund-bissa-a-freedom-fighter-died-at-the-age-of-34-while-fighting-for-freedom-7697957
12- https://www.patrika.com/jodhpur-news/amar-shaheed-bal-mukand-bisa-s-mahaprayan-yatra-had-gathered-in-the-ci-6340187